IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भिखारी ठाकुर की रचनाओं में स्त्रियों का स्वर एवं पक्ष : एक दार्शनिक विश्लेषण

स्निग्धा सिंह

शोधार्थी

हिंदी विभाग

नव नालंदा महाविहार

नालंदा

सम विश्वविद्यालय

संस्कृति मंत्रालय

भारत सरकार

शोध सार :दर्शन केवल तत्त्वदर्शन ही नही अपितु जीवन दर्शन भी है। जीवन दर्शन कोई अमूर्त, अदृश्य कल्पना नहीं है। अतः यह जीवन दर्शन दार्शनिक चिंतन का सगुण पक्ष है जिसमें राजनीति,समाज,नीति,दर्शन,साहित्य ,संस्कृतिविमर्श, स्त्रीविमर्श, पर्यावरण, भूगोल एवं अंतरिक्ष सब समाहित है ।दर्शन और साहित्य एक अदृश्य बंधन में बंधा हुआ है। दोनों में अटूट संबंध है ।साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग लोक साहित्य है।लोक साहित्य दो शब्दों के मेल से बना है। लोक और साहित्य अर्थात् ऐसा साहित्य जिसमें लोक मान्यताओं, लोक संस्कृतियों, लोक कथाओं, लोक कलाओं, लोकगीतों तथा लोक नृत्यों को स्थान दिया जाता है। लोक साहित्य के माध्यम से आम जनता की वाणी को साहित्य में स्थान मिलता है।

कुंजी शब्द - लोक,साहित्य,समाज,स्त्री,संस्कृति

डॉक्टर सत्येंद्र के अनुसार **'लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।'** लोक कलाकार,लेखक, कवि, निर्देशक भिखारी ठाकुर को **भोजपुरी का शेक्सपीयर** कहा जाता है। राहुल सांकृत्यायन ने उनको '**अनगढ़ हीरा**' कहा है और जगदीशचंद्र माथुर ने **'भरत मुनि की परंपरा का कलाकार'**। **'अखियन में लोर बंद होखे जुबान खूब पिटे सब थपरी, धयिके किसिम किसिम के रूप जब मंच पर चढ़े भिखारी'**उनकी यह लोकोन्मुखता हमारी भाव-संपदा को और जीवन के संघर्ष और दुख से

उपजी पीड़ा को एक संतुलन के साथ प्रस्तुत करती है। वे दुख का भी उत्सव मनाते हुए दिखते हैं। वे ट्रेजेडी को कॉमेडी बनाए बिना कॉमेडी के स्तर पर जाकर प्रस्तुत करते हैं।

भिखारी ठाकुर ने समाज को अपने साहित्य के केंद्र में रखा विशेषकर स्त्रियों के स्वर को उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से वाणी दी । उन्होंने गांव की स्त्रियों को बड़े नजदीक से देखा-परखा तथा उनकी आंतरिक व्यथा को महसूस कर चित्रित किया। भिखारी ठाकुर ने **'बेमेल विवाह'** में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को चित्रित किया है। **'बिदेशिया'** में स्त्रियों की उस आंतरिक पीड़ा को अभिव्यक्त करने की कोशिश की है जिसे वह पति का साथ ना मिलने पर उसके विदेश चले जाने पर महसूस करती है। नाटक **'गंगा स्नान'** में वृद्ध स्त्री के शोषण का चित्रण मिलता है। **'ननद -भौजाई'** में बाल विवाह पर व्यंग के माध्यम से प्रहार हुआ है। भिखारी ठाकुर ने जिस सामाजिक समस्या को उठाया है वे आज भी हमारे समाज में किसी ना किसी रूप में विद्यमान हैं।

भिखारी ठाकुर ने स्त्री चरित्र के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों को दिखाया है। एक ओर जहां बिदेशिया की '**प्यारी सुंदरी**' अपने पति के कलकत्ता चले जाने पर विरह की पीड़ा से बेचैन होकर बटोही द्वारा संदेश भिजवाकर पति को शीघ्र ही अपने पास बुलाना चाहती है और अपना सुख वापस चाहती है वहीं दूसरी ओर स्त्रियों का नकरात्मक पहलू भी उनके साहित्य में दिखता है जहां '**भाई विरोध**' और '**पुत्र वध**' नाटक में एक स्त्री कुटनी के रूप में घर भी फोड़ती हुई दिखती है।उनके साहित्य में स्त्रियों के वर्णित इन दोनों पक्षों को देख कर लगता है कि भिखारी ठाकुर की पहुंच स्त्री मन के अंतर्जगत तक थी,उन्हें अच्छी तरह पता था की एक स्त्री की कौन सी अदा पुरुष को लुभा सकती है ,स्त्रियों के नखरें करने के पीछे क्या औचित्य है,इन सबका ज्ञान उनको भली भांति था,तभी तो उनका लगभग ७५% साहित्य स्त्री जीवन को समर्पित है और उन्होंने स्त्री पत्र के अभिनय में एक मिशाल कायम की है।

प्रस्तुत शोध आलेख के अंतर्गत **भिखारी ठाकुर की रचनाओं में स्त्रियों का स्वर एवं पक्ष** विषय पर विस्तारपूर्वक विश्लेषण अपेक्षित है।

भिखारी ठाकुर की रचनाओं पर सूक्ष्मता से दृष्टि डालने से ज्ञात होता है की उन्होंने नारी जीवन की सामाजिक स्थिति ,नारी मनोविज्ञान और नारी की विभिन्न समस्याओं की सूक्ष्मता से जांच पड़ताल की है। उन्होंने तत्कालीन ग्रामीण परिवेश की नारियों को बड़े नजदीक से देखा- परखा और उनके समस्याओं को अपना उपजीव्य बनाया ।अपने लोक नाटकों का लगभग ७५% नारी विमर्श को समर्पित किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारियों के विविध रूप को चित्रित किया है जैसे -बालिका के रूप में नारी ('बेटी -वियोग' और 'ननद- भौजाई') विवाहिता के रूप में((संयोग पक्ष में 'भाई -विरोध', 'गंगा स्नान', 'पुत्र-वध') वियोगिनी नारी के रूप में ('बिदेशिया', 'विधवा विलाप', 'गबर घिचोर' ओर 'कलियुग- प्रेम') माता के रूप में ('गंगा स्नान', 'बेटी वियोग', 'राधेश्याम बहार' , 'माता भक्ति' तथा 'नाई-बहार' में) प्रेयसी के रूप में ('राधेश्याम -बहार', 'पुत्र -वध', 'बिदेसिया' और 'गबरघिचोर में'))[1]

प्रोफेसर मैनेजर पांडे के अनुसार "**उनके नाटकों का दूसरा प्रमुख केंद्रीय विषय भोजपुरी समाज में स्त्रियों की दुर्दशा है। उनके नाटकों ' बिदेशिया', 'बेटी -वियोग' , 'ननद- भौजाई' 'विधवा- विलाप' 'गबर घिचोर' 'कलियुग -प्रेम' आदि में स्त्री के जीवन संघर्ष के विभिन्न रूप और पक्ष दिखाई देते हैं।**"[2]

[1] भिखारी ठाकुर रचनावलीए बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ए पृष्ठ .७

[2] लोकप्रिय संस्कृति का द्वंदात्मक समाजशास्त्रएसंदर्भरू विदेशिया यचंद्रशेखरय सांस्कृतिक संकुल ए पृष्ठ.८

भिखारी ठाकुर के द्वारा सृजित अधिसंख्य नारियां भारतीय परंपरागत नारी -चरित्र के उदाहरण हैं । **बिदेशिया** की नायिका **प्यारी- सुंदरी** पतिव्रता नारी के उदाहरणस्वरूप उपस्थित हैं जो पति के परदेश चले जाने पर विभिन्न समस्याओं को झेलती हुई श्रम के बल पर अपना भरण पोषण करती है और पतिव्रत्य की रक्षा करती है। **'कलियुग- प्रेम' में नशाखोर आवारा पति को भी परमेश्वर मानती हुई उसके द्वारा दिए गए सभी कष्टों को झेलती है। एक वृद्ध बीमार और संपन्न किसान के हाथ बिक जाने के बावजूद** बेटी -वियोग की नायिका **'उपातो'** जैसी एक कमसिन कन्या अपने पति की निष्ठा पूर्वक सेवा करती है और उसको मरते देखती है । **विधवा -विलाप** में वही 'उपातो' अपने वैधव्य की त्रासदी और पट्टीदारों का अमानुषिक अत्याचार भोगती है। भिखारी ठाकुर के मन में नारी के माता रूप के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। माता -भक्ति में उन्होंने मुखर रूप में माता को देवी समझ कर उसकी सेवा तथा पूजा करने की महत्ता गाई हैं ।यहाँ तक भिखारी ठाकुर नारी चरित्र के सकारात्मक पहलू पर प्रकाश डालते हैं।

भिखारी ठाकुर की रचनाओं में हमें स्त्री चरित्र का नकारात्मक पक्ष भी दिखता है जहाँ संयुक्त परिवार को तोड़ने में कुटनी जैसी नारियों को उन्होंने **भाई -विरोध** और **पुत्र- वध** में बड़े व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत कर इस सामाजिक दुष्चक्र से बचने की प्रेरणा दी है।

भिखारी ठाकुर स्त्री मनोविज्ञान के सच्चे पारखी थे। उन्होंने नारियों में गहना ,कपड़ा या अन्य सौंदर्य प्रसाधनों के लिए लिप्सा को बड़े प्रभावी ढंग से 'पुत्र -वध 'में प्रस्तुत किया है और दिखलाया है कि कुछ नारियां इसके लिए दुश्चरित्रता और क्रूरता की किसी भी सीमा तक जा सकती है। वे ऐसी नारियों का सामाजिक रूप से बहिष्कार करते हैं।

भिखारी ठाकुर की दृष्टि उस समय स्त्री विमर्श की ओर गई थी जब दूर- दूर तक कहीं भी इसकी चर्चा न । उन्होंने ऐसी नारी का सृजन किया है जिसका पति उसे छोड़कर कर परदेस चला जाता है और 15 वर्ष तक घर नहीं लौटता। इस बीच परित्यक्ता किसी अन्य पुरुष की ओर आकर्षित हो जाती है और उसे पुत्र की प्राप्ति होती है। सामाजिक परंपराओं की कुटिल दृष्टि के बावजूद वह अपने पुत्र का पालन-पोषण करती है और उसे सदा अपने साथ सहारे के रूप में रखने के अधिकार के लिए संघर्ष करती है और विजयी होती है। भिखारी ठाकुर युवती पत्नी का 15 वर्षों तक परित्याग का विरोध करते हुए गबर -घिचोर में नारी अपने कोख पर अपना आधिपत्य जमाती हुई दिखती है।

बिदेशिया में स्त्री पात्रों की उपस्थिति और उनके व्यवहार के द्वंद के चित्रण का विश्लेषण करते हुए चंद्रशेखर नें यह निष्कर्ष निकाला है कि **उच्च संस्कृति** में स्त्री को धर्मपत्नी, रखैल या मां दुर्गा को बतौर परिभाषित किया जाता है। इसके विपरीत लोकप्रिय संस्कृति में स्त्री पात्रों पर यह रूढिबदध् छवि थोपी नहीं जाती। उसमें स्त्रियां उस समाज की तमाम अच्छाइयों -बुराइयों का शिकार होती है जिसका वे अंग है। लोकप्रिय संस्कृति में आदर्श स्थिति का वर्णन उतना ही काम्य होता है जितना उस यथार्थ स्थिति का जिसका लोग सामना करते हैं।

बिदेशिया नाटक में कुछ दार्शनिक तत्व भी देखने को मिलते हैं-

विदेशी ब्रह्म, बटोही धरम ,रखेलिन माया, प्यारी सुंदरी जीव।

ब्रह्म जीव दूनौ जना एही देह में बाड़न बाकी भेंट ना होखे। कारन माया एकरा के काटेवाला बटोही धरम।

अतः बिदेशिया नाटक में विदेशी ब्रह्म का प्रतीक है बटोही धर्म का रखेलिन माया का तथा प्यारी सुंदरी जीव का। ब्रह्म जीव दोनों शरीर में ही वास करते हैं किंतु दोनों एक दूसरे से मिल नहीं पाते उसका कारण है माया और माया को काटने वाला धर्म है।

बिदेशी जब कलकत्ता चला जाता है तब प्यारी सुंदरी बिरह में जीती है। अतः ब्रह्म और जीव एक नहीं हो पाते। बिदेशी रखैलिन के साथ कलकत्ता में रहने लगता है अर्थात् रखैलिन जो माया की प्रतीक है, वह बिदेशी (ब्रह्म और प्यारी सुंदरी (जीव को मिलने नहीं देती फिर बटोही जो धर्म का प्रतीक है, वह प्यारी सुंदरी का संदेश लेकर बिदेशी के पास जाता है और विदेशी और प्यारी सुंदरी एक हो जाते हैं।

उनका दूसरा लोकप्रिय नाटक है -**गबर घिचोर** ,इस नाटक के माध्यम से उन्होंने स्त्री का एक प्रगतिशील एवं सशक्त रूप हमारे सामने रखा है। **बिदेशिया** में स्त्री जहां पुरुषों के सामने कमजोर तथा प्रताड़ित नजर आती है वही **गबर घिचोर** में स्त्री अपने कोख पर अपना अधिकार जमाती दिखती है। भरे समाज में पंचों के सामने विवाहेत्तर संबंध को स्वीकार करती हुई अपने बच्चे के लिए लड़ती है और विजयी होती है। **गबर घिचोर** की **गलीज बहू** अपने बच्चे पर जिस तर्क के साथ दावा पेश करती है वह हिंदी जगत के लिए बिल्कुल नया है। भिखारी ठाकुर भली-भांति जानते थे कि स्त्रियों को अपनी स्थिति सुधारने के लिए खुद खड़ा होना पड़ेगा तभी उन्होंने 'गलीज बहू'जैसी एक चरित्र को हमारे सामने रखा ।

भिखारी ठाकुर ने **प्यारी सुंदरी** के रूप में सामंतवादी युग की नारी को हमारे सामने प्रस्तुत किया है जो बटोही के जरिए अपने पति तक संदेश पहुंचा कर उसे अपने पास बुला कर अपना सुख वापस प्राप्त करना चाहती है वहीं रखेलिन एक पूंजीवादी व्यवस्था की उपज है जो अपना अधिकार पाने के लिए किसी पर आश्रित नहीं रहती। वह स्वयं बच्चों को लेकर पति के पास आ जाती है वहीं **गबर घिचोर** की **गलीज बहू** इन दोनों युगों के संक्रमण काल की उपज है जो न पति को संदेश भिजवाकर वापस बुलाती है और न स्वयं पति के पास जाती है बल्कि वह स्व की रक्षा हेतु किसी अन्य पुरुष के साथ जीवनयापन करने लगती है ।वह अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए जीवन व्यतीत करती हुई नजर आती है।

भिखारी ठाकुर की रचनाओं पर सूक्ष्मता से दृष्टि डालने से पता चलता है कि उनपर प्रेमचंद का गहरा प्रभाव पड़ा है। भिखारी ठाकुर के **भाई विरोध** नाटक के उपकारी और उपदर को देखकर गोदान की होरी और हीरा की याद आती है। भिखारी ठाकुर को स्त्री मनोविज्ञान की गहरी परख थी। उनकी पहुंच स्त्री के अंर्तजगत तक थी, एक स्त्री की कौन- सी अदा पुरुष को लुभा सकती है, उसके नखरे करने के पीछे क्या औचित्य है इन सबका गहरा ज्ञान उनको था जिसे उन्होंने अपने नाटकों में वर्णित कर समाज को सचेत तथा आगाह किया है।

भिखारी ठाकुर ने किसानी जीवन को सूक्ष्मता से देखा- परखा और यह महसूस किया है कि किसान परिवार के विघटन में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। स्त्री चरित्र के नकारात्मक पहलू को भी उन्होंने अपने नाटकों में प्रदर्शित किया है जहां एक स्त्री कुटनी के रूप में घर फोड़ती हुई दिखती हैं। कुटनी उपदर की पत्नी को भड़काती है और वह घर में कलेश करने लगती है-

'चली कुभाव कुभेस बनाई । ले जल हरबाही में आई।

बोलत नही जहर के पुरिया। जइसे चुपकारिन देव कुरिया।'

भिखारी ठाकुर की पहुंच स्त्री मन के अंर्तजगत तक थी । एक स्त्री की कौन सी अदा पुरुष को लुभा सकती है स्त्री के नखरे करने के पीछे क्या औचित्य है इन सब का गहन ज्ञान भिखारी ठाकुर को था जिसे उन्होंने अपने नाटकों में चित्रित कर समाज को सचेत तथा अगाह किया है।

पुत्र - वध नाटक में भिखारी ठाकुर ने समाज में **बहुपत्नी** विवाह के रूप में नारी शोषण को दिखाया है। इस नाटक में एक स्त्री के आभूषण के प्रति लालच की वजह से अपने सौतेले पुत्र की हत्या करवाने का एक भद्दा दृश्य हमारे सामने उपस्थित होता है।

गंगा स्नान में वृद्ध स्त्री की पीड़ा को चित्रित किया गया है जो अपनी बहू द्वारा प्रताड़ित की जाती है । इस नाटक के माध्यम से भिखारी ठाकुर ने यह दिखाने का प्रयास किया है एक स्त्री कैसे दूसरे स्त्री का शोषण कर सकती है।

'**बेटी- वियोग**' नाटक में भिखारी ठाकुर ने बेमेल विवाह की एक भयावह तस्वीर समाज के सामने उपस्थित की है। 'उपातो' अपने बाल- विवाह को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाती।

' वर खोजे चली गइल माल लेके घर में धइल

दादा लेखा खोजल दुलहवा हो बाबूजी।'"[3]

इस नाटक में स्त्री पीड़ा का एक रूप सामने आया है।

' पशु की तरह किसी भी खूटे में बांध दिए जाने का दुख और वस्तु की तरह बेचकर धन संग्रह के लालच की निकृष्टता को उन्होंने इस नाटक का कथ्य बनाया।'"[4]

फिर भी '**उपातो**' भारतीय नारी की भांति तमाम समस्याओं के बावजूद अपने बूढ़े पति '**झांटूल**' के साथ जीवन निर्वाह करने का प्रयास करती है और पतिव्रत धर्म का पालन करती है। पति के बूढ़े होने के कारण वह जल्द ही विधवा हो जाती है ।हम इस बात से भली-भांति परिचित हैं कि हमारे समाज में विधवाओं के लिए कितने कठिन नियम निर्धारित किए गए हैं ।इसे भिखारी ठाकुर ने अपने नाटक '**विधवा विलाप**' में दर्शाया है कि जब एक कम उम्र की लड़की विधवा हो जाती है तो उसका आर्थिक, मानसिक तथा दैहिक शोषण किया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं भिखारी ठाकुर नारी के तमाम रूपों से परिचित थे उन्होंने नारी चरित्र के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों पक्षों को अपने नाटकों के द्वारा हमारे सामने रखा है नारी चरित्र के सकारात्मक पक्ष हमें विदेशिया की 'प्यारी सुंदरी', बेटी वियोग की 'उपातो' जैसे पात्रों में दिखाई देते हैं जो एकनिष्ठ भाव से पति के प्रति समर्पित है।गलीज बहू का पति 15 वर्ष पहले ही उसे छोड़कर चला गया था इसीलिए वह दूसरे पुरुष के प्रति आकर्षित होती है आज स्त्री विमर्श की काफी चर्चा हो रही है पर भिखारी ठाकुर ने अपने युग में ही इस बात की ओर संकेत कर दिया था कि एक स्त्री चरित्र का नकारात्मक पक्ष भी है जिससे समाज अभी अवगत नहीं है। एक स्त्री ही कैसे दूसरी स्त्री की दुश्मन बन जाती है ,कैसे स्त्री कूटनी बनकर किसी का घर छोड़ देती है इन बातों को उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से समाज तक पहुंचाया स्त्री चरित्र के नकारात्मक पक्ष में गंगा स्नान की 'मलेछों बो' और भाई विरोध की 'कुटनी' में देखने को मिलता है ।नारी के नकारात्मक चरित्र का सृजन उन्होंने समाज को बचाने तथा आगाह करने के लिए किया।

भिखारी ठाकुर के नाटकों में स्त्रियों के कई स्वर सुनाई पड़ते हैं कुछ स्त्रियां पतिव्रत धर्म का पालन करती हुई पति को परमेश्वर मानती हैं और उनके द्वारा दिए गए तमाम अत्याचारों को भी सहती है जैसे बिदेशिया की **प्यारी सुंदरी** और बेटी वियोग की उपातो वहीं एक और विद्रोही नारी भी है जो अपने हक के लिए स्वयं लड़ती है जैसे गबर घिचोर की गलीज बहू।

[3] भिखारी ठाकुर रचनावलीए बिहार राष्ट्रभाषा परिषद एपृष्ट .९०

[4] http.mohallalive.com/2009/tribute to bhikharithakur by hrishikesh sulabh

कहना न होगा कि भिखारी को बिना पढ़े ही नारी मनोविज्ञान की गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त हो गई थी । निष्कर्षतः भिखारी ठाकुर 'नारी -मुक्ति 'के सामाजिक सचेतक थे, जिन्होंने अपने नाटकों में नारी संवेदना के मर्म को पिरोया और उससे जुड़ी उन तमाम तमाम समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1ण्ठाकुर भिखारीएबिदेसियाएभोजपुरी अकादमी एपटना

2ण् भिखारी ठाकुर ग्रंथावलीएबिहार राष्ट्रभाषा परिषदएपटना

3ण् ठाकुर एभिखारी एगबर घिचोरएभोजपुरी साहित्य परिषद्एपटना

4ण् ठाकुरएभिखारीए बेटी.वियोगएभोजपुरी अकादमीएपटना

5ण् ठाकुरए भिखारीएनाई बहारएलोक साहित्य प्रकाशनएपटना

6ण् वर्माए तद्भवएभिखारी ठाकुरः व्यक्तित्व और कृतित्वएवाणी प्रकाशनएनई दिल्ली

7ण् नारायण बद्रीए लोक संस्कृति और इतिहासएराजकमल प्रकाशनएनई दिल्ली

8ण् सिंहएनामवरए इतिहास और आलोचनाएराजकमल प्रकाशनएनई दिल्ली

9ण्शर्माए रामविलास एभारतीय साहित्य की भूमिकाएवाणी प्रकाशनएनई दिल्ली

10ण् मैनेजर पांडे ए साहित्य और इतिहास दृष्टिएवाणी प्रकाशनएनई दिल्ली वाणी

11ण् केसरीएअर्जुन दास एभिखारी ठाकुर और उनका लोकनाट्यए बिहार राष्ट्रभाषा परिषदएपटना